# परिशिष्ट–1

## जीवक

जीवक महात्मा बुद्ध के चिकित्सक थे। वे 600–500 ईसा पूर्व भारत में अपने चिकित्सा–ज्ञान के लिये विख्यात थे। उनके चिकित्सा–ज्ञान की प्रशंसा बौद्ध–ग्रंथों में व्यापक रूप से मिलती है। उनके पास राजा–महाराजा भी चिकित्सा के लिये पहुँचते थे।

जीवक की माता का नाम सीलावती था। वह राजगृह (आधुनिक पटना) की थीं। जीवक के जन्मोपरांत राजकुमार अभय उन्हें महल में लाया और लालन पोषण किया तथा नाम 'जीवक' रखा। एक दिन बिना राजकुमार को सूचित किए वे राजमहल से निकल गए एवं तक्षशिला पहुँच गए। वहाँ सात वर्ष तक मनोयोग से आयुर्वेद का अध्ययन किया। उसके उपरांत गुरु के आदेश पर तक्षशिला के 8 मील के दायरे में वनस्पतियों का गूढ़ और व्यापक अध्ययन किया। उन्हें सभी वनस्पतियों में औषधीय गुण मिले।

उनके उपचार द्वारा एक व्यापारी की सात वर्ष से रोगग्रस्त पत्नी स्वस्थ हो गयी तथा व्यापारी ने उन्हें पर्याप्त धन दिया था। उपचार में जीवक ने मक्खन में कुछ औषधियाँ मिलाकर रोगिणी को नाक में डालीं, जो मुख से निकलने लगी थीं। एक बार बिंबिसार भयानक भयंदर रोग से पीड़ित थे। जीवक द्वारा दिये गये एक लेप से वे स्वस्थ हो गए। बदले में उन्हें राजा ने प्रचुर आभूषण एवं स्वर्ण दिये। उन्हें राजवैद्य बनाया तथा बुद्ध व उनके भिक्षुकों का चिकित्सक नियुक्त कर दिया।

औषधीय चिकित्सा के अलावा जीवक शल्य चिकित्सा के भी ज्ञाता थे। उन्होंने बनारस के एक व्यापारी के आंत्र सम्मूर्छन रोग को पेट की शल्य–चिकित्सा द्वारा आँतें ठीक कर दूर कर दिया। अपने समकालीन बुद्ध के प्रति जीवक की बड़ी श्रद्धा थी।

औषधि विज्ञान और शल्य–चिकित्सा के साथ ही जीवक बाल रोग विशेषज्ञ भी थे। इसी कारण उन्हें 'कोमारभच्च' भी कहा जाता था।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

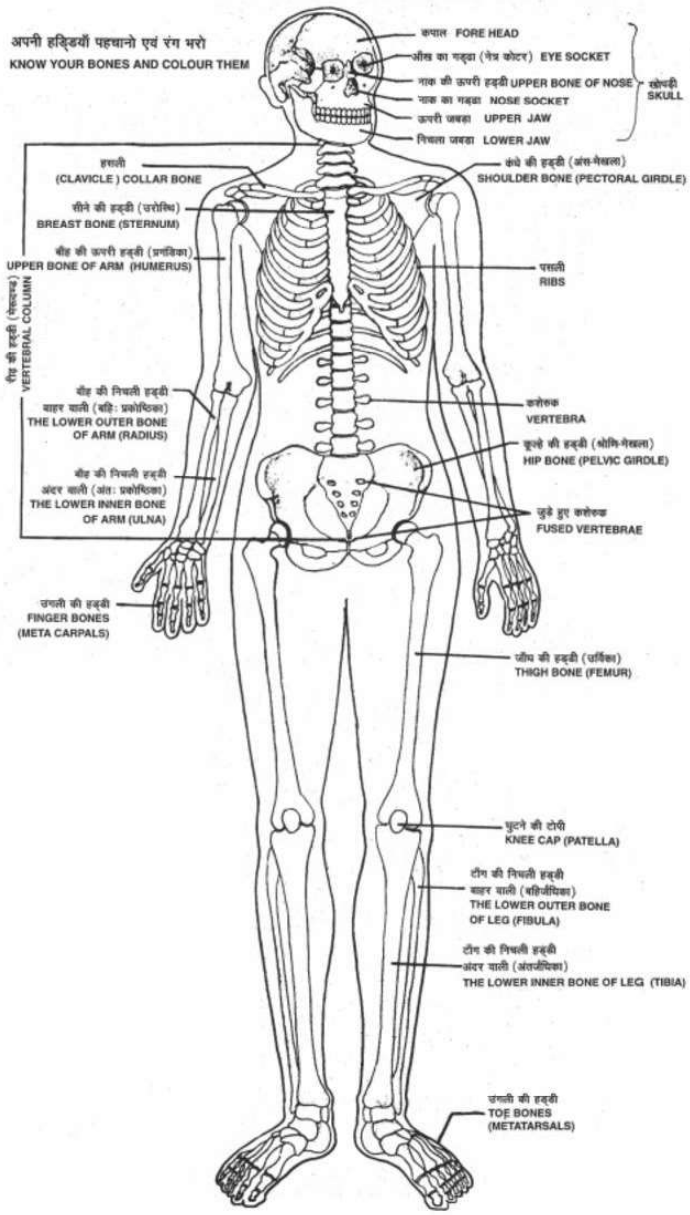


मानव कंकाल–तंत्र का चार्ट

# हमारा संविधान

## हमारा मूल कर्त्तव्य

**51 क. मूल कर्त्तव्य–** भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह–

(क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे;

(ख) स्वतन्त्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे;

(ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे,

(घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे;

(ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है;

(च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परम्परा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे;

(छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अन्तर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणी मात्र के प्रति दयाभाव रखे;

(ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे;

(झ) सार्वजनिक सम्पत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे;

(ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों, में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले।

[1][(ट) माता–पिता या संरक्षक, जैसी भी स्थिति हो, अपने उस बच्चे की, जिसकी आयु छः से चौदह वर्ष के बीच है, शिक्षा देने का अवसर प्रदान करेगा।]

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED BSTBPC